निराकार ज्योति स्वरूप से ही किया सभी ने प्रेम

''किसी का दिल अगर जीतना है तो उसके प्रति सम्पूर्ण समर्पण चाहिए, ऐसा आप सब भी तो मानते ही हैं ना! वैसे भी प्रेम समर्पण का ही एक नाम है। प्रेम के लिए किसी को भी कोई विशेष प्रतिमा या आकृति या आकार की ज़रूरत नहीं पड़ती, इसमें तो सिर्फ गुणों पर फिदा होना होता है। अगर आकृति पर फिदा होंगे तो कहीं न कहीं से थोड़ा बहुत नुक्स निकाल ही लेंगे। शायद इसीलिए उस निराकार से प्यार करना सबको बहुत सहज व सुखद लगा। और लगेगा भी क्यों नहीं, क्योंकि वह गुणों नहीं, सर्व गुणों का सागर है, हम सभी का चहेता है। जिसके आधार से इस सृष्टि में प्रेम बसता है, और इस दुनिया में हर किसी को, जिसका वो सागर है वही चाहिए, जैसे प्रेम, प्यार, स्नेह, और कुछ नहीं। बस यही हमारी, आप सबकी इच्छा भी तो है। तो उस प्रेम के सागर से आओ हम भी प्रेम कर लें। प्रेम की ऐसी ही कुछ झलकियाँ इन धर्म पिताओं, महात्माओं के द्वारा दर्शायी गईं जिनकी भाषा और भाव को सुनकर पता चलता है कि वे परमात्मा से कितना प्यार करते थे...!!!''

ईसा ने ईश्वर के "दिव्य ज्योति" रूप से किया प्रेम

ईसा मसीह (जीज़स क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा है, गॉड इज़ लाईट, **आई एम द सन् ऑफ गॉड।** जीज़स ने कभी यह नहीं कहा कि आई एम गॉड। उसने भी उस लाईट को परमात्मा का स्वरूप बताया।

उस ज्योति 'जेहोवा' से किया प्रेम

ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा **'जेहोवा'**। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं, का प्रतीक है।

दे शिवा वर मोहे

सिक्खों के धर्म-स्थापक गुरु नानक जी ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरु गोविन्द सिंह जी के **'दे शिवा वर मोहे'** शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व के पूज्य हैं।

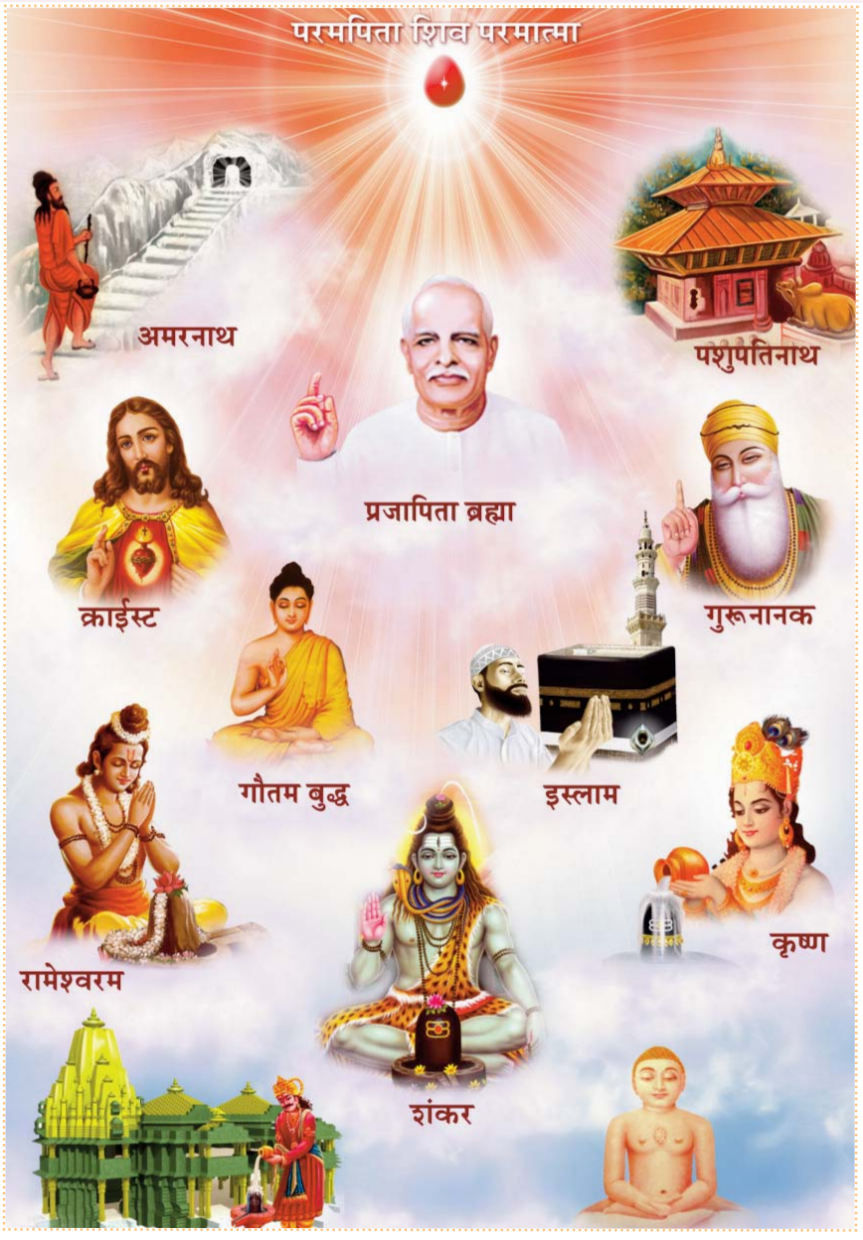

श्रीराम के ने भी पूजा 'शिव' को

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्रीराम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्यों आवश्यकता हुई? ये भी कहा जाता है कि किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पहले परमात्मा का स्मरण अति आवश्यक है, ऐसा ही श्रीराम ने भी किया।

पारसियों में भी पारसनाथ से करते हैं प्रेम

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं।

गिरजाघर का रहस्य

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

श्रीकृष्ण को भी मोहा शिव ने

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई तथा युद्ध में कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की।

मुस्लिमों का प्रेम एक नूर से ही

मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी शिवलिंग के आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे **संग-ए-असवद्** कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है? उसको वे लोग **नूर-ए-इलाही** भी कहते हैं।

जापान, चीन, बेबीलोन में भी निराकार से प्रेम का चिन्ह

जापान में शिकोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊंचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। उसका नाम दिया है **चिंकोनसेकी** जिसका अर्थ शान्ति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। **चीन** में शिवलिंग को **हुवेड-हिफुह** कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। **बेबीलोन** में शिवलिंग को **शिउम्** कहा जाता था। **मिस्र** में भी **सेवा** नाम से पूजा होती थी। **फिजी** देश के निवासी शिव को **'सेवा'** या **'सेवाजिया'** के नाम से पूजते हैं।

शिवरात्रि का त्योहार खुशियों की बहार

आज हम सभी अपने मन को या यूं कहें कि अपने आपको खुशी देने हेतु अन्यानेक खुशियों के अल्पकालिक हथकंडे अपना रहे हैं। फिर भी इस चकाचौंध में हमें खुशी की झलक नाममात्र ही मिल पा रही है। मिलेगी भी कैसे, क्योंकि खुशी विनाशी और बदलने वाली चीज़ों में नहीं है, यह हम नहीं खुद परमात्मा हमसे कह रहे हैं। परमात्मा निराकार शिव जो खुशियों का सागर है, वो हमें खुशी की चाबी देने आये हैं। लेकिन उस खुशी की चाबी को लेने के लिए सबसे पहले अपने अंदर के खज़ानों को बढ़ाना होगा, जैसे शांति, प्रेम, पवित्रता को बढ़ाना होगा। परमात्मा कहते हैं, मेरे बच्चों! अब मैं आपको सबकुछ दूंगा, बस एक काम करो कि अपने मन को इन फालतू कचरों, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से दूर करो। इसके लिए बस आपको जागना है, जागना अर्थात् हर पल, हर क्षण अपने विचारों में खुशी के विचार डालते रहना। अरे! मैं तुम्हारा पिता हूँ, मैं खुशी का सागर हूँ और सागर के बच्चे दु:खी हों, ये अब मुझसे देखा नहीं जाता, इसलिए इस महाशिवरात्रि पर तुम सभी बच्चे मेरे से प्रतिज्ञा करो कि हम इन सभी विकारों का दान देकर और खुशियों की चाबी आपसे लेकर ही छोड़ेंगे। बस हम इंतज़ार कर रहे हैं बाहें पसारे आपके इस संकल्प का। देखते हैं कौन-कौन से बच्चे इसमें नम्बर वन लेते हैं अपने अंदर भरे हुए दुर्गुणों को, दुष्कर्मों को निकालने में! गीता में सुनाई हुई बातों को चरित्रार्थ करने का यही समय है। मेरे लाडलों! अब जाग जाओ, समय बहुत थोड़ा है, भर लो झोली खुशियों से।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय